नैतिक मूल्यों का निर्धारण

drishtiias.com/hindi/printpdf/determination-of-moral-values

नैतिक मूल्यों का निर्धारण

परिचय

‘मानव मूल्य’ में जिस शब्द को समझने की ज़रूरत है वह है मूल्य। मूल्य की व्याख्या विभिन्न क्षेत्रों में अपने-अपने तरीके से होती है। मूल्यों का अर्थ गहरे नैतिक आदर्शों से है जिन्हें उपलब्ध कराने के लिये नैतिक नियम बनाए जाते हैं। मूल्यों के संबंध में समाज की समझ महत्त्वपूर्ण होती है जो कि सामाजिक जीवन को संभव व श्रेष्ठ बनाने के लिय आवश्यक है।

नैतिक मूल्यों का विकास समाज के अंदर होता है परंतु, इनके निर्धारण एवं विकास में अनेक आधारों की भूमिका होती है। जैसे- भौगोलिक परिस्थितियाँ, अन्य समाजों से अत:क्रिया, जनांकिकीय, सांस्कृतिक सापेक्षता, अर्थव्यवस्था आदि।

1. **भौगोलिक परिस्थितियाँ:** किसी प्रदेश विशेष की भौगालिक परिस्थितियाँ वहाँ विभिन्न मूल्यों के निर्धारण में महत्ती भूमिका निभाती हैं। जैसे:
   - (i) **तापमान:** अरब देशों में प्राय: धूल भरी आँधियाँ चलती रहती हैं। इनसे बचने के लिये वहाँ महिलाएँ प्राय: बुर्का तथा पुरुष भी ज़्यादा वस्त्र पहनते हैं। वहीं, हम देखते हैं कि उष्णकटिबंधीय गर्म क्षेत्रों के लोग प्राय: ढीले-ढाले तथा कम वस्त्र पहनते हैं। जैसे-जैसे हम ठंडे प्रदेशों (यूरोप) की ओर जाते हैं तो वहाँ ज़्यादा वस्त्र पहने जाते हैं तथा खान-पान में मद्य **(Alcohol)** का प्रयोग सामान्य माना जाता है।
   - (ii) **उपजाऊ भूमि:** जिन प्रदेशों की भूमि उपजाऊ होती है, वहाँ प्राय: शाकाहार का प्रचलन मिलता है, वहीं इसके विपरीत परिस्थितियों में माँसाहार की प्रवृत्ति पाई जाती है।
   - (iii) **उच्चावच:** पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में धैर्य और मेहनत जैसे मूल्य प्राय: मैदानी क्षेत्रों के लोगों में अधिक पाए जाते हैं क्योंकि उनका जीवन से संघर्ष ज़्यादा होता है।
2. **अन्य समाजों से अंतर्क्रिया:** जिन ग्रामीण या आदिवासी क्षेत्रों का संपर्क अन्य समाजों/गाँवों से कम रहता है, उनमें रूढ़िवादिता (Orthodoxy) अधिक पाई जाती है। इसके विपरीत किसी राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित गाँव या किसी बड़े शहर में मूल्यों में गतिशीलता **(Flexibility)** अधिक मिलती है।
3. **जनांकिकी:** विभिन्न समाजों में जनांकिकी भी मूल्यों के निर्धारण में अहम भूमिका निभाती है। जनांकिकी के अंतर्गत विभिन्न पहलू आते हैं- लिंग अनुपात, जीवन प्रत्याशा, आबादी आदि।
   - (i) **लिंग अनुपात:** जिन समाजों में लिंग अनुपात बराबर होता है, वहाँ प्राय: एक विवाह की परंपरा मिलती है। वहीं, यदि इस अनुपात में बहुत अधिक भिन्नता हो तो प्राय: बहुपत्नी या बहुपति विवाह का प्रचलन देखने को मिलता है।

     उदाहरण के तौर पर आज भी देहरादून (भारत) के पास एक आदिवासी इलाके के खस समुदाय में बहुपति प्रथा का प्रचलन है।
   - (ii) **जीवन प्रत्याशा:** जिन समाजों में जीवन-प्रत्याशा बहुत अधिक होती है और संसाधन भी पर्याप्त होते हैं, वहाँ वृद्धों को ज़्यादा सुविधाएँ और सम्मान मिलता है जैसे- जापान में। परंतु यदि जीवन प्रत्याशा अत्यधिक हो और संसाधनों की कमी, तो उस समाज में वृद्धों की स्थिति शोचनीय हो जाती है। उदाहरण के तौर पर उत्तरी ध्रुव पर पाई जाने वाली ऐस्कीमो जनजाति में वृद्ध, संसाधनों के अभाव में युवा पीढ़ी के भविष्य के लिये अपनी इच्छा से प्राण त्याग देते हैं।
   - (iii) **आबादी:** मूल्यों के निर्धारण में समाज की आबादी भी अहम भूमिका निभाती है। जैसे- जिन राष्ट्रों में आबादी कम है, वहाँ प्राय: गर्भपात की स्वीकृति नहीं दी जाती है। वहीं, अधिक आबादी वाले राष्ट्रों में इसके विपरीत स्थिति मिलती है।
4. **आर्थिक कारक:** किसी समाज में अर्थव्यवस्था का क्या प्रारूप है, यह निश्चित तौर पर वहाँ कुछ मूल्यों का निर्धारण करता है। जैसे- पूंजीवादी देशों (अमेरिका आदि) में ‘व्यक्तिवाद’ को अहमियत मिलती है तो समाजवादी देशों (जैसे- क्यूबा) में ‘सामाजिक योगदान की इच्छा’ का मूल्य विकसित होता है।

   अर्थव्यवस्था के विकास के स्तर के आधार पर भी मूल्यों का निर्धारण होता है। जैसे- जिन समाजों/राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्र (खेती आदि) की प्रधानता है वहाँ भौगोलिक स्थिरता के प्रति रुझान, रूढ़िवादिता, पर्यावरण के प्रति लगाव की प्रवृत्तियाँ मिलेंगी।

   वहीं जिन समाजों/राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र (सेवा क्षेत्र) की प्रधानता है, वहाँ के मूल्यों एवं जीवन में प्राय: गतिशीलता, बहुसंस्कृतिवाद की स्वीकृति तथा पर्यावरण के प्रति अरुचि जैसी प्रवृत्तियाँ मिलती हैं।